IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, November 2026
Impact Factor: 8.2

रविन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ० सुरेन्द्र प्रताप

सहायक प्रोफ़ेसर

शिक्षा संकाय- बी.एड.

म०प्र०राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई, उ०प्र०

surendrapratap14@gmail.com

प्रस्तावना

शिक्षा समाज की अनिवार्य आवश्यकताओं में एक महत्वपूर्ण पक्ष है। आज के भौतिकता की इस अंधी दौड़ में मानवीय मूल्य एवं उदारता मिटती जा रही है वैसे तो विभिन्न शिक्षाविदों ने अलग–अलग तरह से शिक्षा देने की बात कही है लेकिन ज्यादातर शिक्षाविद् समाज के अनुकूल देने के पक्षधर थे। टैगोर ने समाज के सभी जीवों में आत्मा का वास माना है। उन्होंने स्त्रियों, ग्रामीणों एवं गरीबों के लिए सबसे मन में मधुरता का पाठ पढ़ाया है जो आज के युग की आवश्यकता है। टैगोर ने सभी को एक साथ विश्वपटल पर लाकर खड़ा कर दिया है। इन्होंने शिक्षा सम्बन्धी जो सुझाव दिया उसको भारत क्या पूरे विश्व ने अपनाया है। उसके विश्ववाद की झलक उनकी कृति 'गीतांजलि' में मिलती है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने शिक्षा की जो व्यवस्था की है उसकी स्पष्ट झलक आज विश्वभारती में देखने को मिलती है। वहाँ शिक्षा में उनकी उत्कर्षता दिखाई देती है। इस प्रकार टैगोर ने शिक्षा सम्बन्धी जो विचार व्यक्त किये हैं, वे आज भी आत्मसात करने योग्य है। तभी बालक का सर्वतोन्मुखी विकास होगा।

टैगोर के बारे में यह धारणा है कि ये आधुनिक भारत के शैक्षिक पुर्नजीवन के सबसे बड़े पैगम्बर थे। बिना परम्परा से विमुख हुए टैगोर ने शैक्षिक विचारों में क्रान्ति पैदाकर दी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होने जो अपने विचार दिया, वे आज भी गगन मण्डल में प्रकाशमय ग्रहों के समान चमकते हैं। शैक्षिक क्षेत्र में इन्होंने दृढ़ता एवं लगन के साथ जो कार्य किया है, उससे भारतीय शिक्षा प्रगतिशील बनी। यह पाया कि रवीन्द्र नाथ टैगोर के शैक्षिक एवं दार्शनिक सिध्दान्त अनेक दृष्टि से तो आज के भी प्रासंगिक है। इसका विवरण आगे प्रस्तुत है :

प्रकृति और मनुष्य में सम्बन्ध

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने दोनों को (मनुष्य एवं प्रकृति को) वास्तविक माना है। उन्होंने कहा कि मानव अधिक एवं महत्वपूर्ण और वास्तविक तथा मनुष्य को प्रकृति से भी ऊँचा स्थान प्रदान किया है। प्रकृति की उपेक्षा मनुष्य की श्रेष्ठता को स्पष्ट करते हुए

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, November 2026 Impact Factor: 8.2

टैगोर ने यह कहा कि प्रकृति में वह आन्तरिक शक्ति नहीं है जो मनुष्य में है जिसके कारण उसमें नैतिकता, चेतनता, सौन्दर्य और स्वतन्त्रता की भावनाएँ में है, जबकि प्रकृति में घटना और उसके कारण तत्व की प्रधानता है।यह मनुष्य की प्रवृत्ति के सामंजस्य बनाकर चलने का प्रयास करता है जिससे उसका विकास सम्भव हो सकें।

टैगोर ने प्रकृति को अधिक महत्व दिया है, मनुष्य का विकास प्रकृति के सम्पर्क में हो सकता है। मनुष्य प्रकृति से अनेक प्रकार से जुड़ा है प्रकृति और मनुष्य एक–दूसरे के अभाव में सार्थक नहीं है। मनुष्य में चेतना होने के कारण वह प्रकृति एवं मनुष्य के स्वभाव को समझ सकता है। इसलिए उन्होंने शन्ति निकेतन को शान्त प्रकृति के मध्य स्थापित किया कि बालक की शिक्षा प्राकृतिक के माध्यम से आरम्भ होती है।

आत्मा की स्वतन्त्रता

टैगोर का विचार है कि आत्मा को पूर्ण स्वतन्त्रा होनी चाहिए। अनन्त अथवा पूर्ण सुख की प्राप्ति के लिए आत्मा का स्वतन्त्र–अस्तिव आवश्यक है। जब तक आत्मा स्वतन्त्र रूप से विचरण नहीं करेगी, तब तक व्यक्ति को पूर्ण आनन्द नहीं मिल सकता है। ईश्वर और मनुष्य की भिन्न–भिन्न कल्पना की है और उन्हें भिन्न–भिन्न सत्य माना है।

टैगोर की धारणा है कि आत्मा के अन्दर इतनी क्षमता होती है कि वह स्वयं अपनी प्रेरणा से कार्य कर सकती हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि कोई मनुष्य वास्तविकता की प्राप्ति तभी कर सकता है जब कि वह ईश्वर के प्रति अपनी आस्था रखें। परन्तु वे कहते हैं कि आस्था का अर्थ आत्मा की परतन्त्रता नहीं है कि स्वयं खोजकर अनुभवों को प्राप्त न करे, ईश्वर को अंग और अंगीकर में स्वीकार किया है। आत्मा की स्वतन्त्रता के लिए आत्मा–निर्भरता, आत्मा–विश्वास के साथ भयमुक्त वातावरण वाँछनीय है। शिक्षा व्यक्ति को इस योग्य बनाने का प्रयास करे कि अपने अन्दर आत्मानुभूति कर सके और उसकी सार्थकता को स्वीकार कर सके। साधना और चिन्तन से ही आत्मा की अनुभूति होती है। बन्धन मुक्त होकर व्यक्ति आत्मा की सत्ता की अनुभूति कर सकता है। कोई ऐसी शक्ति मनुष्य गलत कार्य करने से रोकती है और यही कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

मानवतावादी विचार

टैगोर ने संसार में मानव को सर्वोच्च स्थान दिया है। प्रकृति से ऊँचा ईश्वर के समीप पर उससे ऊँचा नहीं। मानव प्रकृति मनुष्य के टैगोर को बहुत अधिक महत्व प्रदान करते हैं, परन्तु वे प्रकृति को निश्चित रूप से आत्मा से महान् नहीं स्वीकार करते हैं, परंतु वे प्रकृति को निश्चित रूप से आत्मा से महान् नही स्वीकार करते, वरन् मानव को प्रकृति के श्रेष्ठ मानते हैं वे ईश्वर को सर्वोच्च स्थान देते हैं। गुरूदेव कहते हैं कि–''मानव की जो वास्तविकता है और वही सत्य भी हैं।'' ईश्वर को मानव रूप में प्रतिष्ठित करने की इच्छा के साथ–साथ वे यह भी चाहते हैं कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीत हो और अन्तिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। विरोध एवं हिंसा के कारण सामाजिक संरचना एवं राष्ट्र सभी के लिए दुखद के लिए स्थिति है। यदि भेद–भाव की स्थिति को शिक्षा के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया जाए तो मानवीय स्वभाव सौहार्द्रपूर्ण, तनाव मुक्त होंगे।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, November 2026 Impact Factor: 8.2

पूर्ण संस्कार और स्वानुशासन

जन्मजात महान् बनने वालों के पूर्व संस्कार बहुत ही अच्छे होते हैं, परन्तु यदि सामाजिक सम्पर्क नहीं रहा तो उनका विकास अवरूध्द हो जाता है। कुछ के पूर्व संस्कार इतने सुदृढ़ होते हैं कि सामाजिक अनुकूलता न मिलने पर भी अपने संस्कारों के बल पर स्वयं में एक समाज होता है, क्योंकि विविध सामाजिक रूपों का पूर्व निश्यच वह अपने पूर्व संस्कारों के आधार पर कर बैठता है। अच्छे कर्म की अच्छे संस्कार बने होते है तथा अच्छे संस्कार ही अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करते हैं। मनुष्य की पहचान भी पूर्व संस्कारों के बल ही होती है। हम जिस संकल्प को लेकर चले हैं वह चाहे सफल हो या असफल लेकिन उनके पीछे संस्कारों का ही बल काम देता है।

व्यक्ति स्वयं में प्रबुध्द होता है। वातावरण का सहयोग मिलते ही वह अपने जीवन की रूपरेखा स्वयं तैयार करने लगता है। अपना विकास अपने द्वारा जो कर लेता है या समाज के लिए अधिक उपयोगी सिध्द होता है। जीवन चाहे योगी का हो या भोगी का लेकिन स्वानुशासन के बिना वह महान नहीं बन सकता। यदि कोई व्यक्ति या बालक निर्भय है तो यह उसका आत्मानुशासन माना जायेगा। निर्भरता विकास की संजीवनी शक्ति होती है और सम्पर्क उस विकास का आधार होता है। शिक्षा शिक्षकों पर निर्भर करती है और अनुशासन व्यक्ति के संयम पर आधारित होता है। इसलिए स्वानुशासन का सम्बन्ध संस्कार निर्भयता, नियम–पालन, ज्ञानार्जन, विचार, आदान–प्रदान आदि से होता है। यह आत्म–बल ही आत्मानुशासन का मूलभून तत्व है, जो ऐसा कर लेता है वह सचमुच महान होता है।

सौन्दर्यानुभूति

रवीन्द्र नाथ टैगोर कला और सौन्दर्य के प्रेमी थे। सौन्दर्य के सिध्दान्त की दो शाखा–सुन्दरता और दुरूपता मानते थे। सुन्दता का अर्थ एक तरह से वह मानव जाति की विशिष्टता का द्योतक मानते थे। सुन्दरता से व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आ जाता है। इसलिए टैगोर सदैव प्राकृतिक सौन्दर्य से बालक को चिपके रहने की सलाह देते थे। सुन्दर वस्तुओं को देखकर बालक के अन्दर एक प्रकार की आर्कषण की भावना उत्पन्न होती है और वह उस वस्तु से आर्कषित होकर उसमें भी अन्छाइयाँ होती है, उसको ग्रहण करता है। जो जनपद से दूर होता था। बालक के अन्दर मानवता, नैतिकता का जन्म प्राकृतिक सौन्दर्य से आसानी से किया जा सकता है। इसलिए रवीन्द्र नाथ टैगोर सदैव कहा करते थे कि बालक को खुले स्थानों पर भ्रमण करने का मौका दिया जाए। टैगोर का शान्ति निकेतन के माध्यम से शिक्षा देने का मुख्य लक्ष्य बालकों को प्राकृति सौन्दार्य की अनुभूति कराने से था।

टैगोर की दृष्टि सें सौन्दर्य ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार अच्छाई और बुराई नैतिकता के सिध्दान्त रूपी वृक्ष की दो शाखायें हैं अथवा जीवन और मृत्यु प्राणी जीवन के दो पक्ष है। इसीलिए रवीन्द्र नाथ टैगोर यह कहते हैं कि व्यक्ति को व्यक्ति के सम्पर्क में रखा जाए और उसको प्राकृतिक वातावरण दिया जाए ताकि वह प्रकृति के सौनदर्यानुभूति करके व्यक्ति और समाज दोनों के साथ अच्छा व्यवहार कर सके।

संस्कृतियों का अध्ययन

जीवन के व्यक्तिगत रूप से जीने के लिए नहीं होता, बल्कि सामाजिक हित और उसके साथ्ज्ञ अपनी उन्नति दोनों के लिए है। कुछ विद्वानों ने शिक्षा का उद्देश्य सांस्कृतिक उत्थान बतलाया है। सांस्कृतिक का तात्पर्य है सुसंस्कृति को फैलाना अर्थात् मनुष्य

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, November 2026 Impact Factor: 8.2

को सुसंस्कृत, सभ्य और शिष्ट बनाना है। इस सम्बन्ध में ''ओटावे' ने लिखा है कि–''समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहारों के प्रतिमानों को अपने सदस्यों को प्रदान करना शिक्षा का कार्य है।'' टैगोर का विचार गाँधी जी से मिलता–जुलता है। गाँधी ने कहा था कि, शिक्षा के साहित्यिक पक्ष से अधिक महत्व मैं उसके सांस्कृतिक पक्ष को देता हूँ। संस्कृति ही वह आधार है, वह प्रारम्भिक वस्तु है जिसे बालक यहाँ से प्राप्त करेंगे। यह तुम्हारे आचरण एवं व्यवहार के प्रत्येक कार्य में परिलक्षित होना चाहिए।

रवीन्द्र नाथ टैगोर एक अन्तर्राष्ट्रीय स्थापित के व्यक्ति थे जिन्होंने संस्कृतियों के माध्यम से विश्वमैत्री का लक्ष्य पूरा किया। इसलिए संस्कृतियों का अध्ययन शिक्षा का अनिवार्य अंग माना गया है।

सामाजिक उदारता

सामाजिक उदारता का अर्थ तब स्पष्ट होता है जब व्यक्ति अधिक–से–अधिक महत्वपूर्ण जन सामान्य कल्याणकारी कार्य करते हैं। महान बनने की प्रवृत्ति वाले व्यक्ति संकुचित त्याग को ठुकरा देते हैं और सामाजिक हित का वरण करते हैं। कहीं–कहीं सामाजिक उदारता से महान व्यक्तियों के मार्ग में अवरोध उत्पन्न होता हैं, लेकिन वह सम्पर्कों से निर्भय होना सीखता हैं। ऐसा कर्मठ उदार व्यक्ति सामाजिक आदर्शों के रूप में सामने आता है और हम उसे महान कहकर उससे कुछ सीखना चाहते हैं।

भारतीय शिक्षा दर्शन में उसकी महत्ता

रवीन्द्र नाथ का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय दर्शन में उसकी प्रासंगिकता है बिना मानवतावाद के आज के समय में भारतीय शिक्षा की कल्पना नही की जा सकती।

टैगोर ने कहा था कि–'' उनसे अधिक सार्वभौमिक, सर्वव्यापी व्यक्तित्व वाले मनुष्य से मेरी भेंट नही हुई।''

इन शब्दों में काउण्ड कैसरलिंग ने टैगोर के प्रभाव का वर्णन किया है। अमरत्व, ईश्वर तथा मानव–प्रेम के उदात आदर्शों से प्रेरित इस महाकवि ने अपने गम्भीर निबन्धों एवं सार्थक तथा सरस कविताओं द्वारा आधुनिक भारतीय चिन्तकों में अग्रगण्य स्थान प्राप्त कर लिया है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा–

''सत्ता किसी व्यक्ति में नहीं, असीम पुरूष में है।

टैगोर की मान्यता है कि धार्मिक सिध्दि की उच्चतम अवस्था में भी जीवात्मा का लोप या विलय नहीं होता। आत्मा और ब्रह्मा के बीच अन्तर सदा बना रहना चाहिए।

''जो होने की हम निरन्तर साधना करते हैं, वह पहले ही हो चुका है।''

टैगोर का भी विश्वास है कि–''आत्मा की स्वतन्त्रा स्वयं ईश्वर के लिए अनिवार्य है।'' वह स्वयं हमारी स्वतन्त्रता का पोषण करते हुए कहता है–''मेरे पास स्वतन्त्र सत्ता के रूप में आओं। किसी भी बन्द जीव का मुझ तक पहुँचना सम्भव नहीं।''

रवीन्द्र नाथ टैगोर उत्कट मानतावादी हैं। वे मनुष्य को ही सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानते हैं और वस्तुतः शेष जगत से मानव की श्रेष्ठता दिखाने में ही मानवतावाद का आरम्भ होता है। टैगोर के अनुसार असीम का पूर्ण उद्घाटन तारों भरे आकाश नहीं, मनुष्य की आत्मा में होता है। ईश्वर के प्रकट रूपों में मनुष्य अनुपम है। मानव–आत्मा अतुलनीय है, क्योंकि उसमें ईश्वर अपने आपकों विशेष प्रकार से प्रकट करता है। परम् सत्ता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि मनुष्य से अधिक सत्य और कुछ नहीं। टैगोर इसे अपनी काव्यकामी भाषा में इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, November 2026 Impact Factor: 8.2

''ईश्वर की वीणा में बहुत से तार हैं, कुछ लोहे के हैं, कुछ ताँबे के हैं, परन्तु ईश्वर की वीणा में सोने का तार केवल मनुष्य ही है।''

परन्तु मानव को सृष्टिक्रम दिखाकर ही टैगोर सन्तुष्ट नही हो जाते, वे उसे एक आध्यात्मिक रंग में भी रंग देते हैं। मध्यकालीन वैष्णव कवि चण्डीदास की भाँति वे भी कहते हैं कि सबसे बड़ा सत्य है मनुष्य उससे बढ़कर और कुछ नहीं। अपने प्रसिध्द ग्रन्थ 'द रिलिजन आफ मैन' में कबीर, दादू आदि का बड़े आदर के साथ उल्लेख करते हैं। इन सन्तों ने ईश्वर के मानवीय रूप नर–नारायण को बड़ी योग्यता के साथ प्रस्तुत किया था।

स्पष्ट है कि टैगोर आध्यात्मिक मानवतावाद के प्रतिपादक है। वे समग्र सत्य ईश्वर को भी मानवता की दृष्टि से परिभाषित करते हैं। उनके अनुसार चरम तत्व या परम सत्ता मानवीय है। उसकी सदैव हमें चेतना होती है , उससे हम प्रभावित होते हैं और उसे व्यक्त करते हैं। परम सत्ता में यदि मानवीय अंश न हो, तो वह मनुष्य के भीतर सर्वोत्तम अंश उसकी महानता को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। इसलिए टैगोर कहते हैं–

''ईश्वरीय सत्ता को चाहे जो नाम दिया हो परन्तु अपने मानवीय स्वरूप के कारण ही उसे हमारे धर्म के इतिहास में सर्वोच्च स्थान मिला है। वह पूर्णता के साथ उस समस्त आदर्शों के लिए चिन्तन–पृष्ठभूमि प्रस्तुत करती है, जिसका मनुष्य के अपने स्वभाव से सामंजस्य है।''

मानवता के विषय में रवीन्द्र नाथ अपना निष्कर्ष इस प्रकार व्यक्त करते हैं–''मेरा धर्म मानव धर्म है जो असीम मानवता में परिभाषित होता है''

यह धर्म कुछ मानवीय गुणों को ईश्वर में आरोपित करने में नहीं, अपितु ईश्वर की मानवता की सिध्दि में है, जो पहले से ही अनुमानित है।

रवीन्द्र नाथ टैगोर उच्चकोटि के मानवतावादी व्यक्ति है वे संसार में मानव को सर्वोच्च स्थान देते हैं, प्रकृति से ऊँचा ईश्वर के समकक्ष पर उससे ऊँचा नहीं। प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्धों की चर्चा करते समय, हमने देखा कि टैगोर प्रकृति को यथेष्ट महत्व प्रदान करते हैं, परन्तु वे प्रकृति का निश्चित रूप से आत्मा से महान नहीं स्वीकार करते, वरन् मानव को प्रकृति से श्रेष्ठ मानते हैं। वे ईश्वर को सर्वोच्च स्थान देते हैं और चाहते हैं कि ईश्वर को भी मानव रूप में देखना चाहिए। ये यहाँ तक कहते हैं कि –''मानव की वास्तविकता है ओर वह सत्य भी है।'' ईश्वर को मानव रूप में प्रतिष्ठित करने की इच्छा के साथ–साथ वे यह भी चाहते हैं कि ईश्वर मानवीय गुणों से भी भरपूर हो। वे चाहते हैं कि ईश्वर मानवीय गुणों को प्रतीक हो और अन्तिम सत्य मानवता की कसौटी पर कसा जाए।

प्रकृति और मनुष्य के सम्बन्ध में हम कह सकते हैं कि टैगोर दोनों को वास्तविक मानते हैं, पर मनुष्य की अपेक्षाकृति अधिक वास्तविक और मनुष्य को प्रकृति से ऊँचा स्थान प्रदान करते है।

ईश्वर की शक्ति और अनन्त के ज्ञान पर आधारित

मनुष्य वास्तविकता में विचरता है, उसकी विकसित सीमाओं को निश्चित करता है तथा उसको विकसित भी करता है। टैगोर का मत है कि ईश्वर ही सब कुछ देने वाला नहीं है। मनुष्य भी सृष्टि को देता है और ईश्वर मनुष्य की सहायता दृष्टि के कार्य में लेता है। टैगोर यह भी कहते हैं कि–

''ईश्वर स्वयं को तभी अनुभव कर सकता है जब वह स्वयं को मानव चक्षुओं से देखें और मानव करों से छुये।''

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 6, November 2026 Impact Factor: 8.2

इस विचार को अपनी रचना ''साधना'' में टैगोर ने और भी स्पष्ट किया है। ''साधना'' में उन्होंने कहा है कि–

''ईश्वर की शक्ति और अनन्त के ज्ञान का परिचय आकाश के तारों के मुकाबले में मानव आत्मा में अधिक स्पष्ट रूप से मिलता है।''

शान्ति निकेतन में एक अवसर पर मानव की सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ की चर्चा करते हुए उन्होंने एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया उन्होंने कहा कि–

''ईश्वर की वाणी अनेक तारों से झंकृत होती है। इसके कुछ तार लोहे के और कुछ तार ताँबें के है, पर कुछ ऐसे तार इस वीणा में हैं जो सोने के बने है और ईश्वर की वीणा के स्वर्ण के बने तार है।''

टैगोर ने मानवता को ईश्वर की सृष्टि में प्रथम स्थान प्रदान किया है।

शिक्षार्थी का महत्व

गुरूदेव टैगोर के मतानुसार प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड मनुष्य है। शिक्षार्थी महत्वपूर्ण शिक्षालयों में शिक्षा और शिक्षक से अधिक महत्वपूर्ण शिक्षार्थी है। अतः उसी अभिरूचि और क्षमता के हिसाब से शिक्षा होनी चाहिए, क्योंकि, ''किसी भी शिक्षा योजना में व्यक्ति का सर्वाधिक महत्व है।'' टैगोर लिखते हैं–

''मनुष्य को पहले से अधिक व्यापक क्षेत्र में अधिक गहरे स्थायी भाव से तथा अधिक सशक्त रूप में एकता की अनुभूति होनी चाहिए।''

उसके लिए वैयक्तिकता का ज्ञान ''हमें मनुष्य के मन और स्वभाव को अच्छी तरह जानना चाहिए। हमारे लिए यह जरूरी है कि हम दूसरों की अद्वितीय वैयक्तिकता को समझें, जिसमें मनुष्य की आत्मा की यथार्थ–भाषा होती है।''

इस सन्दर्भ में उनके निम्न कथन उद्वरणीय है:

'हमें यह ज्ञान लेना है कि मनुष्य का महान मस्तिष्क एक–सा है।''

''मेरे अनुभवों के सभी स्त्रोतों कर अन्त मानव में हो गया है। मैंने बार–बार ईश्वर का आह्वान किया है और उसका उत्तर मनुष्य ने अपने मूर्त अथवा अमूर्त कार्यों तथा त्याग और उपभोगों से दिया है।''

इस प्रकार स्पष्ट है कि टैगोर के मानवतावाद में आध्यात्मिकता की झलक है। टैगोर का रान्देश मानवीय आदर्शों की एकता स्थापित करना थौ टैगोर ने सामान्य और सरल मानव जीवन में आनन्द का जो रूप रखा, वह भी उसके मानवतावाद का स्पष्ट परिचायक है टैगोर ने कहा है–'' मै तो मानव के हृदय में वास करने का इच्छुक हूँ।''

शिक्षा की पूर्ति के लिए ही, उन्होने शन्ति–निकेतन में ''ग्रामीण पुननिर्माण संस्थान'' स्थापित किया और उसका लक्ष्य मानवता का उध्दार निर्धारित किया।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, November 2026
Impact Factor: 8.2

निष्कर्ष-

संसार का एक परिवार है

वर्तमान समय में टैगोर की शिक्षा भारतीय शिक्षा के इतिहास में बहुत अधिक प्रासंगकि है क्योंकि गुरूदेव ने पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखा जो एक महत्वपूर्ण सोच है। विभिन्न परिस्थितियों से होकर एक महान लक्ष्य की पूर्ति तक पहुँचने वाला मानव, ठोस अनुभव से हमारे परिवार, पड़ोस, समाज, राष्ट्र और पूरे विश्व को लाभ मिलता है। व्यक्ति अपरिचित हो सकता है, उसकी भाषा भिन्न हो सकती है, उसकी भौगोलिक सीमा दुर्गम या सुगम हो जाती है। वह छोटा या बड़ा हो सकता है। वह काला या गोरा हो सकता है, वह गूँगा या बहरा हो सकता है, वह निर्धन या धनी रह सकता है, किन्तु मानवता सब में है। मानवता के बिना न तो वह मानव है और न किसी राष्ट्र का नागरिक है। राष्ट्रीय सीमा के बिना न तो वह मानव है और न किसी राष्ट्र का नागरिक है। राष्ट्रीय सीमा एक संकोच की सीमा होती है। उसमें खुलकर उदार बनना कठिन होता है। जब तक हम सोचते रहते हैं या कार्य करते हैं कि यह मेरा निजी है और दूसरे जिस तरह से विचारों की संकीर्णता त्यागनी पड़ती है, उसी तरह देश की सीमा से भी बाहर के सम्पर्क को महत्वपूर्ण मानना पड़ता है। समाज में रहकर यह ज्ञान हमें न भी हो तो प्रकृति हमें यह ज्ञान बराबर देती रहती है। सारी भौगोलिक सीमायें प्रकृति की दी हुई है। इसलिए मानव जीवन ही प्राकृतिक है अपनी आवश्यकताओं से सम्बन्ध जोड़कर हम उस प्रकृति का भले ही अनेक टुकड़ों में विभक्त करें, इस उदारता से हमें यह शिक्षा लेनी चाहिए कि उससे यहाँ कोई दुर्भावना नहीं है। प्रकृति से हम अधिक शक्तिशाली कभी नहीं हो सकते। यह हमें जैसे चाहे नचा सकती है। इतना सत्य हमारे लिए प्रत्यक्ष है, तब भी हम अपनी भावना की संकीर्णता को छोड़ने में हिचकते हैं। इस पूर्ण विकास में विश्व के हर एक समाज का योगदान रहता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ज्ञान–सम्पर्क को ही मानवीय विकास मानते थे। पूर्ण विकास में विश्व को ज्ञान के विकास की दृष्टि से एक परिवार मानते थे।

अमेरिकी विद्वान प्रो. वोड का कथन One World Idea अर्थात् ''एक विश्व विचार'' के अनुसार सचमुच यह संसार एक परिवार है। ज्ञान के विविध स्त्रोतों को सारे संसार में फैलाकर प्रकृति न हमें विश्व को परिवार मानने के लिए विवश किया। रवीन्द्र नाथ टैगोर इस दृष्टि से एक दूरदर्शी विद्वान थे क्योंकि भविष्य की अशान्ति को मिटाने के लिए उन्होंने जो संकीर्णता तोड़ी है वह शिक्षा जगत् ही नहीं, बल्कि ज्ञान के विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। रवीन्द्र नाथ टैगोर प्रकृति के अनुरागी इसीलिए नहीं थे, कि एक दृश्य पर मोहित होकर हम आजकल नए कवियों की भाँति माथा–पच्ची किया करें, बल्कि सारे दृश्यों को ईश्वरीय सुन्दर रचना मानकर उन्हें शिक्षा के लिए उपयोगी मानें। जीवन की विभिन्न समस्याओं के बीच हमें विश्व स्तर पर अर्थात् एक मनुष्य को दूसरे के निकट आकर मानवीय समस्याओं पर विचार करना चाहिए। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने पूरी सृष्टि को मानवतावादी दृष्टि से देखा। विश्व एक परिवार तभी सम्भव है, जब हम सभ्यताओं का एकीकरण करें। सभ्यता किसी एक व्यक्ति की नहीं होती है। बल्कि अनेक बीच के एक संयमित जीवन को सभ्यता कहते हैं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि ज्ञान को मनुष्य से अलग कर दिया जाए तो संस्कृति अपने आप नष्ट हो जायेगी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 6, November 2026
Impact Factor: 8.2

सन्दर्भ–सूची

1. दर गोल्डेन बुक आफ टैगोर, पृ. 127
2. Personality Page No. 58
3. शान्ति निकेतन, खण्ड 8 सामंजस्य
4. शान्ति निकेतन, खण्ड 13 (2)
5. शन्ति निकेतन में 1931 में दिए गये एक भाषण से।
6. द रिलिजन ऑफ मैन, पृ. 205
7. द रिलिजन ऑफ मैन, पृ. 96
8. रवीन्द्र नाथ टैगोर : रेलिजन आफ मैन, जार्ज एलेन अनविन, 1931–32, पृ.134
9. रवीन्द्र नाथ टैगोर : क्रियेटिव यूनिटी, मैकमिलन एण्ड कं लि, लन्दन, 1959, पृ. 80
10. रवीन्द्र नाथ टैगोर : गीतांजलि, नं, 147 मैकमिलन एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1965
11. रवीन्द्र नाथ टैगोर : साधना, मैकमिलन एण्ड कं. लि, लन्दन, पृ 417
12. रवीन्द्र नाथ टैगोर : एड्रेस टू शन्ति निकेतन, मैकमिलन एण्ड कं. लि. 1931
13. रवीन्द्र नाथ टैगोर : विश्वभारती बुलिटन न. 7, पृ.2
14. रवीन्द्र नाथ टैगोर : शिक्षा, 1342 बंगावंद, पृ. 246
15. रवीन्द्र नाथ टैगोर : ए पोपटस स्कूल, बुलेटिन नं. 9 विश्वभारती जुलाई
16. रवीन्द्र जीवनी, बाल्यूम, 3 297–298
17. एस. सिन्हा, ''सोसियल थिंकिगं आफ रवीन्द्र नाथ टैगोर'' पब्लिशिंग हाऊस बाम्बे, 1962

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-41140